

अखिलेश हाजाम

बनाम

बिहार राज्य

अप्रैल 28, 1995

[जी. एन. रे और फैज़ान उद्दीन, न्यायमूर्तिगण]

भारतीय दंड संहिता, 1860/साक्ष्य अधिनियम, 1872:

धारा 302- परिस्थितिजन्य साक्ष्य- माँ, बहन, पत्नी और पुत्री की हत्या का आरोप- अभियुक्त द्वारा प्रकटीकरण कथन देना- परिणामस्वरूप हथियार की बरामदगी- परिस्थितिजन्य साक्ष्य इतना पूर्ण होना चाहिए कि 'अभियुक्त' की निर्दोषता के अनुरूप किसी निष्कर्ष के लिए कोई उचित आधार न छोड़े- अधीनस्थ न्यायालयों द्वारा परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर दोषी ठहराया गया अभियुक्त- अभियुक्त को संदेह का लाभ दिया गया और दोषसिद्धि अपास्त कर दी गई।

अपीलकर्ता पर अपनी माँ, बहन, पत्नी और पुत्री की हत्या का आरोप लगाया गया था। अभियोजन पक्ष के अनुसार, अपीलकर्ता, हत्या करने के बाद, पास के एक गाँव की ओर भाग गया और उसे वहीं पकड़ लिया गया और घर वापस लाया गया। अपीलकर्ता की चिकित्सा परीक्षा ने सिद्ध किया कि नशे का कोई लक्षण नहीं था। मुकदमे की सुनवाई में, अभियोजन पक्ष ने अपीलकर्ता द्वारा दिए गए खुलासे वाले बयान पर भरोसा किया, जिसमें चार हत्याओं को अंजाम देने में हथियार के रूप में इस्तेमाल किए गए लोहे के एंगल को छिपाने का जिक्र था। हालांकि अभियोजन पक्ष ने 12 अभियोजन साक्षी की जांच की, उनमें से किसी ने भी अभियोजन मामले का समर्थन नहीं किया। हालांकि, दर्ज किए गए परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर भरोसा करते हुए, विचारण न्यायालय ने अपीलकर्ता के विरुद्ध दोष सिद्ध होने का फैसला दर्ज किया और उसे

भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत दोषी ठहराया और उसे आजीवन कारावास भुगतने की सजा सुनाई। उच्च न्यायालय ने दोषसिद्धि और सजा की पुष्टि की।

इस अपील में इस न्यायालय के समक्ष, यह तर्क दिया गया कि नशे का सिद्धांत अभियोजन पक्ष द्वारा पेश किया गया था जिसे चिकित्सा परीक्षा द्वारा झूठा साबित कर दिया गया; कि अपीलकर्ता गाँव में पूरी तरह से मौजूद था, लेकिन अभियोजन पक्ष ने व्यर्थ ही यह दिखाने की कोशिश की कि वह फरार हो गया था, जबकि वास्तव में उसे गाँव में ही गिरफ्तार किया गया था; कि प्रकटीकरण कथन और परिणामस्वरूप रक्त रंजित लोहे के एंगल की जब्ती विश्वसनीय नहीं थी और यदि इसे स्वीकार भी कर लिया जाता है, तो अपीलकर्ता की दोषसिद्धि इस पर आधारित नहीं हो सकती है; और यह कि कोई चश्मदीद गवाह नहीं था, और किसी भी साक्ष्य के अभाव में परिस्थितिजन्य साक्ष्य श्रृंखला को पूरा नहीं करता था जिससे केवल यही निष्कर्ष निकले कि अपीलकर्ता और कोई नहीं, उसकी माँ, पत्नी, बहन और बेटी का हत्यारा था।

अपील की अनुमति देते हुए, इस न्यायालय ने

अभिनिर्धारित किया: 1. परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर किसी व्यक्ति को दोषी ठहराने के लिए आवश्यक प्रमाण का मानक अब इस न्यायालय के कई निर्णयों द्वारा अच्छी तरह से निर्धारित किया जा चुका है। इस न्यायालय द्वारा व्यक्त किए गए मानक के अनुसार, मामले के समर्थन में अभियोजन पक्ष द्वारा जिन परिस्थितियों पर भरोसा किया जाता है, उन्हें न केवल पूरी तरह से स्थापित किया जाना चाहिए, बल्कि उन परिस्थितियों द्वारा प्रदान किए गए साक्ष्य की श्रृंखला इतनी पूर्ण होनी चाहिए कि अभियुक्त की निर्दोषता के अनुरूप किसी निष्कर्ष के लिए कोई उचित आधार न छोड़े। जिन परिस्थितियों से एक अभियुक्त के दोष का निष्कर्ष निकाला जाना है, वे निर्णायक प्रकृति की होनी चाहिए और केवल अभियुक्त के दोष की परिकल्पना के अनुरूप होनी चाहिए और वही अभियुक्त के दोष के अलावा किसी अन्य परिकल्पना द्वारा समझाए

जाने योग्य नहीं होनी चाहिए और जब सभी परिस्थितियाँ संचयी रूप से एक साथ ली जाती हैं तो केवल यही अकाट्य निष्कर्ष निकलता है कि अभियुक्त अकेला ही अपराध करने वाला है।  
(869-एफ से एच, 870-ए)

2. अभियोजन साक्ष्य का एक अध्ययन यह दर्शाता है कि पूरी संभावना में चार हत्याएं दोपहर 2 बजे से पहले हुई थीं क्योंकि सभी चार पीड़ितों के मृत शरीर पक्षद्रोही साक्षी अभियोजन साक्षी- 4 द्वारा दोपहर लगभग 2.00 बजे देखे गए थे। चिकित्सा साक्ष्य के अनुसार, शवपरीक्षा किए जाने के समय से 24 घंटे से अधिक समय पहले मृत्यु हो चुकी थी। यह सच है कि अभियोजन साक्षी- 2, अभियोजन साक्षी- 4 और अभियोजन साक्षी- 5 का साक्ष्य है कि पीड़ित सुबह 7.30 बजे जीवित थे, लेकिन इस संबंध में कोई निश्चित साक्ष्य नहीं है कि उन्हें अभियोजन साक्षियों द्वारा किस समय तक जीवित देखा गया था। लेकिन एक बात निश्चित रूप से स्पष्ट है कि हत्याएं दोपहर 2.00 बजे से कुछ समय पहले हुई थीं। अभियोजन साक्ष्य से यह भी स्पष्ट नहीं है कि अपीलकर्ता सुबह 7.30 बजे से लेकर दोपहर 2.00 बजे तक, जिसके दौरान हत्याएं की गईं, पीड़ितों के साथ घर में रहा। इसके विपरीत अभियोजन साक्षी- 4 ने स्पष्ट रूप से कहा कि जब वह घटना स्थल पर गया तो अपीलकर्ता वहाँ नहीं देखा गया था। यह स्वीकार किया जाता है कि अपीलकर्ता के पास अपनी माँ, बहन, पत्नी और बेटी के जघन्य अपराध को करने का कोई हेतु नहीं था और केवल इसलिए कि परिवार की गाँव में किसी के साथ कोई शत्रुता नहीं थी या उक्त अवधि के दौरान घर में किसी चोरी या डकैती का कोई कोलाहल नहीं था, इससे केवल यही निष्कर्ष नहीं निकलेगा कि अपीलकर्ता के अलावा किसी और ने हत्याएं नहीं की होंगी, इस आशय के किसी भी सकारात्मक साक्ष्य के अभाव में कि घटना की तारीख को सुबह 7.30 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक अपीलकर्ता लगातार पीड़ितों के साथ घर में रहा। ऐसी

स्थिति में, यह निष्कर्ष निकालना असुरक्षित और अनुचित होगा कि अपीलकर्ता ही अपराध का एकमात्र अपराधी है। (871-बी से एफ)

3. साक्ष्य से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि घटना के बाद अपीलकर्ता फरार हो गया था। साक्ष्य से पता चलता है कि अपीलकर्ता गाँव में ही पाया गया था, जहाँ से उसे कुछ साक्षियों द्वारा घर ले जाया गया और पुलिस के आने तक घर के दरवाजे पर नजरबंद रखा गया। यदि वास्तव में अपीलकर्ता का अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिए घटनास्थल से या गाँव से गायब होने का कोई आशय था, तो उसे गाँव छोड़कर किसी अज्ञात स्थान पर जाने से किसी भी चीज़ ने नहीं रोका, लेकिन ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है जो यह सुझाए कि अपीलकर्ता ने गाँव छोड़ दिया था। अभिलेख पर उपस्थित साक्ष्य से जो कुछ सामने आता है, वह यह है कि अपीलकर्ता घर में नहीं पाया गया था, लेकिन गाँव में घूमता हुआ पाया गया, जिसके एक से अधिक कारण हो सकते हैं। इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है कि अपीलकर्ता की अनुपस्थिति में किसी ने भयानक हत्याएं कीं और जब अपीलकर्ता घर में आया और अपने करीबी और प्रियजनों के मृत शरीर पाए, तो वह हक्का-बक्का हो गया और अस्थायी रूप से अपने मन का संतुलन और स्थिरता खो बैठा, जैसा कि अभियोजन साक्ष्य से स्पष्ट है।(871-एच, 872-ए से सी)

4. यह स्वीकार करना कठिन है कि लोहे के एंगल की जबूती अपीलकर्ता द्वारा दिए गए प्रकटीकरण कथन के आधार पर थी। यदि लोहे के एंगल को छिपे हुए स्थान से बरामद किया भी गया होता, तो भी अकेले बरामदगी की इस परिस्थिति के आधार पर, उस पर मानव रक्त की उपस्थिति के रूप में सीरोलॉजिस्ट की किसी प्रतिवेदन के अभाव में अपीलकर्ता की दोषसिद्धि स्थापित नहीं की जा सकती थी। इस प्रकार, परिस्थितिजन्य साक्ष्य निर्णायक रूप से केवल इसी अकाट्य निष्कर्ष की ओर नहीं ले जाता है कि अपीलकर्ता अपराध करने वाला था और कोई नहीं।

अभियोजन मामला संदेह के क्षेत्र से आगे नहीं जाता है, जिसका लाभ अपीलकर्ता को दिया जाना है। (872-एच, 873-ए)

5. अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के भाव से यह अच्छी तरह से देखा जा सकता है कि साक्षियों का अपीलकर्ता के पक्ष में जानबूझकर साहस और प्रयास रहा है और यह स्पष्ट हो जाता है कि साक्षी सत्य के साथ सामने नहीं आए और न्याय के मार्ग को विचलित करने के लिए भौतिक तथ्यों को छिपाने की कोशिश की, जिसके कारण उन्हें सबसे अच्छे से पता हैं। अभियोजन साक्ष्य को देखने पर, यद्यपि हमें लगता है कि पूरी संभावना में अपीलकर्ता दोषी हो सकता है, लेकिन कानूनी साक्ष्य के अभाव में किसी व्यक्ति को दोषी ठहराने के लिए संभावनाओं और नैतिक विश्वासों का कोई स्थान या भूमिका नहीं है। अभिव्यक्ति "हो सकता है" और "अवश्य होना चाहिए" के बीच एक लंबी दूरी तय की जानी है। भावनात्मक विचार कितने भी मजबूत क्यों न हों, लेकिन वे सबूत का स्थान नहीं ले सकते। यह वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण है कि चार निर्दोष व्यक्तियों ने अपनी जान गंवा दी और दोषी जो कोई भी हो, बिना दंड के छूट जाता है। लेकिन यह और भी बुरा होगा यदि किसी निर्दोष व्यक्ति को केवल मजबूत और गंभीर संदेहों के आधार पर इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है और, इसलिए, अपीलकर्ता की दोषसिद्धि को संदेह का लाभ देकर अपास्त किया जाना चाहिए। [873-बी से ई]

आपराधिक अपीलीय क्षेत्राधिकार: 1987 की आपराधिक अपील सं. 540।

पटना उच्च न्यायालय के आपराधिक अपील सं. 630/1982 में दिनांक 2.7.86 के निर्णय और आदेश से।

के.आर. नागराज अपीलकर्ता के लिए।

प्रमोद स्वरूप उत्तरदाता के लिए।

न्यायालय का निर्णय दिया गया:

**फ़ैज़ान उद्दीन, न्यायमूर्ति.** 1. इस अपील में अपीलकर्ता अखिलेश हाजाम ने सत्र न्यायाधीश, रोहतास, सासाराम द्वारा सत्र विचारण सं. 30/1981 में दर्ज की गई भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत अपनी दोषसिद्धि को चुनौती दी है, जिसके लिए उसे आजीवन कारावास भुगतने की सजा सुनाई गई थी। उक्त दोषसिद्धि और सजा की पुष्टि आपराधिक अपील सं. 630/1982 में दिनांक 30.9.1982 को पटना उच्च न्यायालय द्वारा की गई है।

2. इस अपील को जन्म देने वाले प्रासंगिक तथ्य यह हैं कि 10.10.1979 को लगभग 4.00 अपरान्ह पर जब गाँव देहलाबाद का चौकीदार सोमारू दुसाध देहलाबाद गाँव के पूर्व की ओर जा रहा था और एक केदार, सुनार के घर के पास पहुँचा था, तो उसे एक राजा सिंह द्वारा सूचित किया गया कि अपीलकर्ता अपनी माँ, बहन, पत्नी और एक पुत्री की हत्या करने के बाद फरार हो गया है। यह सूचना मिलने पर चौकीदार, सोमारू अपीलकर्ता के घर गया जहाँ कुछ व्यक्ति भी इकट्ठा हो गए थे। चौकीदार एक राम देव के साथ घर के अंदर गया और उसके आश्चर्य के लिए उसने पाया कि अपीलकर्ता की माँ का मृत शरीर घर के आँगन में रक्त से लथपथ एक चारपाई पर पड़ा हुआ था, उसके हाथ पर चोट थी। बरामदे के पश्चिमी तरफ जिसे रसोई के रूप में इस्तेमाल किया जाता था, उसने अपीलकर्ता की पत्नी और बहन के मृत शरीर खून से सने हुए पाए, उनके सिरों पर चोटें थीं। अपीलकर्ता की पुत्री भी घायल पड़ी थी लेकिन चूंकि वह जीवित थी, उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया लेकिन बाद में उसकी भी मृत्यु हो गई। चौकीदार सोमारू ने अपने भाई नारायण दुसाध को घटनास्थल पर छोड़ दिया और नागडीह गाँव के हनीफ चौकीदार को भी मृत शरीरों की निगरानी रखने के लिए बुलाया और उसके बाद वह रोहतास थाना की ओर बढ़ा जहाँ उसने 6.30 अपरान्ह पर प्रथम सूचना प्रतिवेदन (प्राथमिकी) दर्ज कराई जिसमें कहा गया कि उसे पता चला था कि अपीलकर्ता अखिलेश ने लोहे के एंगल से हमला करके पीड़ितों को मार डाला था। अभियोजन पक्ष के अनुसार अपीलकर्ता

हत्या करने के बाद टूंबा गाँव की ओर भाग गया और उसे टूंबा रेलवे स्टेशन के पास पकड़ा गया और घर वापस लाया गया।

3. सहायक पुलिस अवर-निरीक्षक ने घटना स्थल का दौरा किया और अपीलकर्ता को घर के दरवाजे पर पाया जहाँ उसे उसके पिता और कुछ ग्रामीणों द्वारा रखा गया था। अवर-निरीक्षक ने अपीलकर्ता के व्यवहार और दिखावट से ऐसा लगा कि वह किसी नशीले पदार्थ के प्रभाव में था और, इसलिए, अपीलकर्ता को गिरफ्तार करने के बाद उसने उसे उसकी चिकित्सा परीक्षा के लिए अकबरपुर अस्पताल भेज दिया। डॉक्टर जिसने अपीलकर्ता की जांच की, उसने अपनी प्रतिवेदन, प्रदर्श 7 में इंगित किया कि विष का कोई लक्षण नहीं था और अपीलकर्ता सामान्य मानसिक अवस्था में था।

4. पुलिस अवर-निरीक्षक द्वारा पूछताछ किए जाने पर, अपीलकर्ता ने कथित तौर पर एक लोहे के कोण को छिपाने के संबंध में बयान दिया, जिसका इस्तेमाल चार हत्याओं को अंजाम देने में हथियार के रूप में किया गया था। अभियोजन पक्ष के अनुसार, रक्त रंजित लोहे के एंगल को अपीलकर्ता की सूचना पर घर के एक कमरे में ईंधन के उद्देश्यों के लिए रखे गए लकड़ी के ढेर के नीचे छिपाए गए स्थान से बरामद और जब्त किया गया था। सहायक पुलिस अवर-निरीक्षक ने स्थानीय निरीक्षण किया और मृत शरीरों के संबंध में पंचनामा तैयार किया, रक्त रंजित मिट्टी को जब्त किया और घटना स्थल का नक्शा खाका तैयार किया। मृत शरीरों की शवपरीक्षा की गई और प्रतिवेदन प्राप्त हुई।

5. अपीलकर्ता को भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत विचारण के लिए भेजा गया। अपीलकर्ता ने अपने दोष से इनकार किया और विचारण का निवेदन किया। अभियोजन पक्ष ने 12 साक्षियों तक की जांच की लेकिन उन्होंने अभियोजन मामले का समर्थन नहीं किया। हालांकि, विचारण न्यायालय ने परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर भरोसा करते हुए अपीलकर्ता के विरुद्ध

दोष सिद्ध कर दिया और, इसलिए, अपीलकर्ता को भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत दोषी ठहराया और उसे आजीवन कारावास भुगतने की सजा सुनाई। उच्च न्यायालय ने भी विचारण न्यायाधीश द्वारा व्यक्त किए गए विचार को पक्ष में पाया और, इसलिए, दोषसिद्धि और सजा की पुष्टि की।

6. अपीलकर्ता के लिए उपस्थित अधिवक्ता ने तर्क दिया कि अभियोजन पक्ष ने कुछ साक्ष्य पेश करने की कोशिश की जिससे यह पता चले कि अपीलकर्ता नशे की हालत में था और उसे दी जा सकने वाली सजा से बचने के लिए उसने ऐसा ढोंग किया जैसे कि वह विकृत चित्त वाला व्यक्ति बन गया हो, जिस तथ्य को चिकित्सा प्रतिवेदन, प्रदर्श पी.7 द्वारा झूठा साबित किया गया जिसने इंगित किया कि विष का कोई लक्षण नहीं था और अपीलकर्ता सामान्य मानसिक अवस्था में पाया गया। उन्होंने यह भी प्रस्तुत किया कि अपीलकर्ता गाँव में पूरी तरह से मौजूद था लेकिन अभियोजन पक्ष ने व्यर्थ ही यह दिखाने की कोशिश की कि वह फरार हो गया था, जबकि वास्तव में उसे गाँव में ही गिरफ्तार किया गया था। अपीलकर्ता के अधिवक्ता ने आगे प्रस्तुत किया कि प्रकटीकरण कथन और रक्त रंजित लोहे के एंगल की जब्ती के संबंध में साक्ष्य विश्वसनीय नहीं हैं और यदि इसे स्वीकार भी कर लिया जाता है तो अपीलकर्ता की दोषसिद्धि को लोहे के एंगल की बरामदगी की एकमात्र परिस्थितियों पर आधारित नहीं किया जा सकता है। यह तर्क दिया गया कि घटना के कोई प्रत्यक्षदर्शी नहीं हैं और उद्देश्य के किसी भी सबूत के अभाव में परिस्थितिजन्य साक्ष्य इस बात की कड़ी को पूरा नहीं करते हैं कि इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके कि अपीलकर्ता ही उसकी मां, पत्नी, बहन और बेटों का हत्यारा था।

7. वर्तमान मामले में, यह स्वीकार किया जाता है कि घटना के कोई प्रत्यक्षदर्शी नहीं हैं और अपीलकर्ता की दोषसिद्धि पूरी तरह से परिस्थितिजन्य साक्ष्यों पर आधारित है। यह कहा जा सकता है कि परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर किसी व्यक्ति को दोषी ठहराने के लिए

आवश्यक प्रमाण का मानक इस न्यायालय के कई निर्णयों द्वारा अच्छी तरह से निर्धारित किया गया है। इस न्यायालय द्वारा प्रतिपादित मानक के अनुसार, अभियोजन पक्ष द्वारा मामले के समर्थन में जिन परिस्थितियों पर भरोसा किया गया है, वे न केवल पूरी तरह से स्थापित होनी चाहिए, बल्कि उन परिस्थितियों द्वारा प्रदान किए गए साक्ष्यों का आधार इतना पूर्ण होना चाहिए कि आरोपी की निर्दोषता के अनुरूप निष्कर्ष के लिए कोई उचित आधार न बचे। जिन परिस्थितियों से किसी आरोपी के अपराध का निष्कर्ष निकाला जाता है, वे निर्णायक प्रकृति की होनी चाहिए और केवल आरोपी के अपराध की परिकल्पना के अनुरूप होनी चाहिए, और उन्हें आरोपी के अपराध के अलावा किसी अन्य परिकल्पना द्वारा स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। जब सभी परिस्थितियाँ सामूहिक रूप से इस अकाट्य निष्कर्ष पर पहुँचती हैं कि आरोपी ही अपराध का अपराधी है। वर्तमान मामले में अधीनस्थ न्यायालय और उच्च न्यायालय दोनों ने अपीलकर्ता को उन परिस्थितियों के आधार पर दोषी ठहराया है जो अपीलकर्ता के विरुद्ध सिद्ध मानी जाती हैं और जिनका विवरण नीचे दिया गया है:

- (1) सभी चार मृतक व्यक्ति 10.10.1979 को सुबह 7.30 बजे जीवित थे जब अभियोजन साक्षी- 5, अपीलकर्ता के पिता आमजोर के लिए घर से निकले थे।
- (2) चार पीड़ित दोपहर लगभग 2.00 बजे घर में मृत पाए गए थे जिसमें अपीलकर्ता भी अपने पिता और पीड़ितों के साथ रहता था।
- (3) सुबह 7.30 बजे से दोपहर 4.00 बजे के बीच की अवधि में घर में चोरी या डकैती का कोई कोलाहल नहीं था और उनकी किसी भी व्यक्ति के साथ कोई शत्रुता नहीं थी जो किसी अन्य व्यक्ति द्वारा हत्या किए जाने की संभावना को खारिज करता है।
- (4) अभियुक्त हत्या के तुरंत बाद अपने घर से फरार पाया गया था जिसे बाद में गाँव के बाहर पकड़ा गया और दोपहर लगभग 4 बजे घर के दरवाजे पर लाया गया।

(5) जब अपीलकर्ता अपने पिता और अन्य साक्षियों के साथ था, तो सहायक पुलिस अवर-निरीक्षक पहुँचा और अपीलकर्ता को ऐसा देखा जैसे वह किसी नशीले पदार्थ के प्रभाव में था।

(6) हालाँकि उसके परिवार के चार सदस्यों, जिनमें उसकी पत्नी और पुत्री शामिल थीं, की हत्या कर दी गई थी, अपीलकर्ता उन्हें देखने नहीं गया और घर के बाहर ही रहा।

(7) अपीलकर्ता द्वारा दिए गए खुलासे के आधार पर, अपीलकर्ता की सूचना पर घर के उस कमरे से खून से सना हुआ लोहे का कोण बरामद किया गया और जब्त किया गया, जो उसमें रखे ईंधन की लकड़ी के नीचे छिपाया हुआ था।

8. विचारणीय प्रश्न यह उठता है कि क्या उपर्युक्त परिस्थितियाँ सभी उचित संदेह से परे सिद्ध हो चुकी हैं और यदि ऐसा है, तो क्या वे इतनी पूर्ण श्रृंखला प्रदान करती हैं कि अपीलकर्ता की निर्दोषता के अनुरूप निष्कर्ष निकालने का कोई उचित आधार न बचे। दूसरे शब्दों में, क्या वे परिस्थितियाँ जो स्थापित बताई गई हैं, निर्णायक प्रकृति की हैं और केवल अपीलकर्ता के अपराध की परिकल्पना के अनुरूप हैं, और क्या उन्हें अपीलकर्ता के अपराध के अलावा किसी अन्य परिकल्पना द्वारा स्पष्ट नहीं किया जा सकता है, जो कि यदि समग्र रूप से लिया जाए, तो इस एकमात्र अकाट्य निष्कर्ष पर पहुँचती है कि अपीलकर्ता ही अपराध का अपराधी है।

9. अभियोजन साक्ष्य का एक अध्ययन यह दर्शाता है कि पूरी संभावना में चार हत्याएं दोपहर 2.00 बजे से पहले हुई थीं क्योंकि सभी चार पीड़ितों के मृत शरीर पक्षद्रोही साक्षी अभियोजन साक्षी- 4 द्वारा दोपहर लगभग 2.00 बजे देखे गए थे। चिकित्सा अधिकारी, अभियोजन साक्षी- 11, जिसने 11.10.1979 को दोपहर 4.40 बजे से मृत शरीरों पर शवपरीक्षा की, ने अभिसाक्ष्य दिया कि शवपरीक्षा किए जाने के समय से 24 घंटे से अधिक समय पहले मृत्यु हो चुकी थी। यह सच है कि अभियोजन साक्षी- 2, अभियोजन साक्षी- 4 और अभियोजन

साक्षी- 5 का साक्ष्य है कि पीड़ित सुबह 7.30 बजे जीवित थे, लेकिन इस संबंध में कोई निश्चित साक्ष्य नहीं है कि उन्हें अभियोजन साक्षियों द्वारा किस समय तक जीवित देखा गया था। लेकिन एक बात निश्चित रूप से स्पष्ट है कि हत्याएं दोपहर 2.00 बजे से कुछ समय पहले हुई थीं। अभियोजन साक्ष्य से यह भी स्पष्ट नहीं है कि अपीलकर्ता सुबह 7.30 बजे से लेकर दोपहर 2.00 बजे तक, जिसके दौरान हत्याएं की गईं, पीड़ितों के साथ घर में रहा। इसके विपरीत अभियोजन साक्षी- 4 ने स्पष्ट रूप से कहा कि जब वह घटना स्थल पर गया तो अखिलेश हजाम वहाँ नहीं देखा गया था। यह स्वीकार किया जाता है कि अपीलकर्ता के पास अपनी माँ, बहन, पत्नी और बेटी की हत्या करने का कोई मकसद नहीं था, और केवल इसलिए कि परिवार की गाँव में किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी या उक्त अवधि के दौरान घर में किसी चोरी या डकैती की कोई घटना नहीं हुई थी, इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि हत्याएं अपीलकर्ता के अलावा किसी और ने नहीं की होंगी, क्योंकि इस बात का कोई पुख्ता सबूत नहीं है कि अपीलकर्ता घटना वाले दिन सुबह 7:30 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक पीड़ितों के साथ लगातार घर में मौजूद था। ऐसे में, यह निष्कर्ष निकालना असुरक्षित और अनुचित होगा कि अपीलकर्ता ही इस अपराध का एकमात्र अपराधी है।

10. यह साक्ष्य कि अपीलकर्ता हत्याओं के तुरंत बाद फरार हो गया था, भी संदिग्ध और अनिश्चित है। अभियोजन साक्षी- 4 के अनुसार अपीलकर्ता घर में मौजूद नहीं था लेकिन उसे टूबा स्टेशन गाँव की ओर जाते हुए देखा गया और अभियोजन साक्षी- 2 के साक्ष्य के अनुसार, टूबा गाँव देहलाबाद गाँव से केवल एक मील दूर है जहाँ घटना हुई थी। इसका मतलब है कि दोनों गाँव एक दूसरे के करीब स्थित हैं। इस साक्ष्य से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि घटना के बाद अपीलकर्ता फरार हो गया था। साक्ष्य से पता चलता है कि अपीलकर्ता गाँव में ही पाया गया था, जहाँ से उसे कुछ साक्षियों द्वारा घर ले जाया गया और पुलिस के आने तक घर

के दरवाजे पर नजरबंद रखा गया। यदि वास्तव में अपीलकर्ता का अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिए घटनास्थल से या गाँव से गायब होने का कोई आशय था, तो उसे गाँव छोड़कर किसी अज्ञात स्थान पर जाने से किसी भी चीज़ ने नहीं रोका, लेकिन ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है जो यह सुझाए कि अपीलकर्ता ने गाँव छोड़ दिया था। अभिलेख पर उपस्थित साक्ष्य से जो कुछ सामने आता है, वह यह है कि अपीलकर्ता घर में नहीं पाया गया था, लेकिन गाँव में घूमता हुआ पाया गया, जिसके एक से अधिक कारण हो सकते हैं। इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है कि अपीलकर्ता की अनुपस्थिति में किसी ने जघन्य हत्याएं कीं और जब अपीलकर्ता घर में आया और अपने करीबी और प्रियजनों के मृत शरीर पाए, तो वह हक्का-बक्का हो गया और अस्थायी रूप से अपने मन का संतुलन और स्थिरता खो बैठा, जैसा कि अभियोजन साक्ष्य से स्पष्ट है। अभियोजन साक्षी- 4 ने यह भी अभिसाक्ष्य दिया कि अपीलकर्ता एक देवरतन सिंह के बोरिंग के पास गिर गया था। सहायक पुलिस अवर-निरीक्षक सहित लगभग सभी साक्षियों ने अभिसाक्ष्य दिया है कि अपीलकर्ता नशे में धुत व्यक्ति जैसा व्यवहार कर रहा था और ऐसा लग रहा था जैसे उसने अपना होश खो दिया हो। इसी कारण से पुलिस ने अपीलकर्ता को पहले अस्पताल भेजा ताकि चिकित्सा अधिकारी द्वारा उसकी मानसिक स्थिति की जांच की जा सके। ऐसा प्रतीत होता है कि मानसिक असंतुलन के कारण अपीलकर्ता चलने की स्थिति में नहीं था, इसलिए उसे खाट पर लिटाकर अस्पताल ले जाया गया।

11. प्रकटीकरण कथन के आधार पर रक्त रंजित लोहे के एंगल की जब्ती के संबंध में, जो अपीलकर्ता द्वारा दिया गया बताया जाता है, वह भी संदेह से मुक्त नहीं है। अभियोजन पक्ष के अनुसार, अपीलकर्ता ने यह बयान दिया कि उसने लोहे का एंगल कमरे में रखा था, जिसे उसने अपराध में हथियार के रूप में इस्तेमाल की गई ईंधन की लकड़ी के नीचे छिपा रखा था। लेकिन अभियोजन साक्षी- 6 के बयान के अनुसार, जिसने कोण बरामदे में रखा था, वह खुला और

सुलभ स्थान है। खुले और सुलभ स्थान से बरामदगी को केवल बयान के आधार पर बरामदगी नहीं कहा जा सकता। इसलिए, यह स्वीकार करना कठिन है कि लोहे के एंगल की बरामदगी अपीलकर्ता द्वारा दिए गए बयान के आधार पर की गई थी। यदि लोहे का एंगल किसी छिपे हुए स्थान से बरामद भी हुआ होता, तो भी बरामदगी के इस आधार पर, सीरोलॉजिस्ट की प्रतिवेदन के अभाव में, अपीलकर्ता को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। अतः, हमारी राय में, ऊपर वर्णित परिस्थितिजन्य साक्ष्य निर्णायक रूप से इस अकाट्य निष्कर्ष पर नहीं पहुँचते कि अपीलकर्ता ही अपराध का एकमात्र अपराधी था और कोई और नहीं। अभियोजन पक्ष का मामला संदेह के दायरे से बाहर नहीं जाता, जिसका लाभ अपीलकर्ता को दिया जाना चाहिए।

12. अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि गवाहों ने जानबूझकर अपीलकर्ता के पक्ष में गवाही देने का प्रयास किया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि गवाहों ने सच नहीं बोला और न्याय की प्रक्रिया को बाधित करने के लिए महत्वपूर्ण तथ्यों को दबाने की कोशिश की, जिसके कारण वे स्वयं ही बेहतर जानते हैं। हालांकि, अभियोजन पक्ष के साक्ष्यों का अध्ययन करने पर हमें यह प्रतीत होता है कि संभवतः अपीलकर्ता ही अपराधी है, लेकिन कानूनी साक्ष्यों के अभाव में किसी व्यक्ति को दोषी ठहराने में संभावनाओं और नैतिक मान्यताओं का कोई स्थान या भूमिका नहीं होती। "हो सकता है" और "अवश्य होना चाहिए" के बीच एक लंबी दूरी तय की जानी है। भावनात्मक विचार-----कितने भी मजबूत क्यों न हों, लेकिन वे सबूत का स्थान नहीं ले सकते। यह वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण है कि चार निर्दोष व्यक्तियों ने अपनी जान गंवा दी और दोषी जो कोई भी हो, बिना दंड के छूट जाता है। लेकिन यह और भी बुरा होगा यदि किसी निर्दोष व्यक्ति को केवल मजबूत और गंभीर संदेहों के आधार पर इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है और, इसलिए, अपीलकर्ता की दोषसिद्धि को संदेह का लाभ देकर अपास्त किया जाना चाहिए।

13. उपरोक्त कारणों से अपील सफल होती है और इसे स्वीकार किया जाता है। धारा 302 के तहत अपीलकर्ता की दोषसिद्धि और उसके तहत दी गई सजा को अपास्त किया जाता है। यह निर्देश दिया जाता है कि यदि अपीलकर्ता किसी अन्य अपराध में वांछित नहीं है, तो उसे रिहा कर दिया जाए।

जी.एन.

अपील अनुमत।

खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नहीं किया जा सकता । समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।